पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

Scanned with CamScanner

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

Scanned with CamScanner

भागीरथी बाल शिक्षा सदन सै०स्कूल
दयालपुर (दिल्ली-94)

Page No.
Date:

(सत्र - 2020-21)

विषय - हिन्दी (काव्य-खण्ड)

कक्षा - X

पाठ 1 शीर्षक - पद कवि - सूरदास

(यह सभी कार्य कॉपी में करना है।)

(कविता का सार)

सगुण भक्तिधारा के प्रमुख रचनाकारों में सूरदास जी का महत्व-पूर्ण स्थान है। इनके पदों में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति गहरा अनुराग प्रकट हुआ है। प्रस्तुत पदों में श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में व्याकुल गोपियों का वर्णन है। वे योग का संदेश लेकर आने वाले उद्धव को तरह-तरह के उपालंभ देती हैं।

- पहले पद में गोपियाँ उद्धव को संबोधित करते हुए कहती हैं - हे उद्धव! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो जिसने अपने जीवन में कभी प्रेम नहीं किया। केवल हम ही मूर्ख हैं, जो कृष्ण के प्रेम में दिन रात मगन रहती हैं। जिस प्रकार चींटी गुड़ से चिपकी रहती है, उसी प्रकार हम भी कृष्ण के प्रेम में लिपटी हुई हैं।
- दूसरे पद में गोपियाँ कृष्ण को निष्ठुर बताती हुई कहती हैं - हे उद्धव! हम तो कृष्ण के आने की आस से ही अपने मन को संभाले बैठे थे। परंतु कृष्ण के द्वारा भेजा योग संदेश सुनकर हमारे साँसों की डोरी हमारे हाथ से छूटती जा रही है। कृष्ण के इस वियोग संदेश को सुनकर अब किसी प्रकार का धैर्य नहीं रखा जाता।
- तीसरे पद में गोपियाँ कृष्ण को अपना जीवन-आधार बताते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने मुख में तिनका पकड़े रहता है, उसे छोड़ता नहीं, उसी प्रकार वे दिन रात कृष्ण का नाम रटती रहती हैं। उन्हें योग का संदेश कड़वी ककड़ी के समान कड़वा लगता है। वे कहती हैं - योग का मार्ग उन्हीं के लिए ठीक है, जिनके मन में कृष्ण के प्रति प्रेम न हो।
- चौथे पद में गोपियाँ कृष्ण पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं - ऐसा प्रतीत होता है कि कृष्ण पूर्ण राजनीतिज्ञ हो गए हैं। वे चतुर तो पहले ही थे, परंतु अब तो राजनीति के दाँव-पेंच भी सीख गए हैं। पहले के राजनीतिज्ञ प्रजा की भलाई के लिए कार्य करते थे, परंतु अब तो वह (कृष्ण) स्वयं ही अन्याय कर रहे हैं, जो हमें योग का संदेश भेज रहे हैं। उनका यह व्यवहार राज-धर्म के बिल्कुल विपरीत है।

(कृ०प०उ०)

Scanned with CamScanner

(हलसहित काव्यांश) ②

Page No.

• **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

प्रथम पद ① ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी - - - - -

- - - - - - 'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी ||

प्रश्न (i) – 'नाहिनमन अनुरागी' किस पर व्यंग्य है और क्यों?

उत्तर – 'नाहिनमन अनुरागी' कहकर उद्धव पर व्यंग्य किया गया है, क्योंकि जिसके जीवन में प्रेम नहीं, वह अभागा है।

प्रश्न (ii) – गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली क्यों कहा है?

उत्तर – गोपियों ने उद्धव के ज्ञान की तुलना में स्वयं को अबला और भोली कहा है। गोपियाँ उद्धव की भाँति ज्ञानी नहीं हैं, इसलिए उन्हें प्रेम के समक्ष योग समझ नहीं आता।

प्रश्न (iii) – गोपियों के 'कृष्ण-प्रेम' की तुलना 'गुर चाँटी ज्यौं पागी' से क्यों दी गई है?

उत्तर – गोपियों के कृष्ण प्रेम की तुलना 'गुर चाँटी ज्यौं पागी' से करके कृष्ण के प्रति गोपियों की अनन्य भक्ति व प्रेम को अभिव्यक्त किया गया है। जिस प्रकार चींटी गुड़ से चिपकी रहती है, छोड़ती नहीं, उसी प्रकार गोपियाँ भी कृष्ण प्रेम में अनुरक्त हैं।

प्रश्न (iv) प्रस्तुत काव्यांश किस भाषा में लिखा गया है? ये पंक्तियाँ मूलतः कहाँ से संकलित की गई हैं?

उत्तर – प्रस्तुत काव्यांश ब्रजभाषा में लिखा गया है। ये मूलतः 'सूरदास' द्वारा रचित 'सुरसागर' के 'भ्रमर-गीत' से संकलित किया गया है।

प्रश्न (v) 'प्रीति-नदी' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर – 'प्रीति-नदी' मे रूपक अलंकार है।

विद्यार्थियों हेतु कार्य ∠ • कवि 'सूरदास' की जीवनी लिखिए
• प्रथम पद की तरह विद्यार्थियों को तीसरे पद – "हमारै हरि हारिल की लकरी - - - - यह तौ 'सुर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन-चकरी" पर आधारित निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर देने हैं –

प्रश्न (i) 'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है और क्यों?

प्रश्न (ii) गोपियों को योग कैसा लगता है? प्रस्तुत पंक्तियों के आधार पर बताइए।

प्रश्न (iii) प्रस्तुत काव्यांश के कवि और कविता का नाम बताइए।

प्रश्न (iv) प्रथम पंक्ति 'हमारै हरि हारिल की लकरी' में कौन-सा अलंकार है?

प्रश्न (v) किस उदाहरण द्वारा योग को व्यर्थ कहा गया है?

निर्देश → • सभी बच्चे दिए गए कार्य को अपने रजिस्टर मे स्वच्छतापूर्वक पूर्ण करें। स्कूल खुलने पर मूल्यांकन हेतु कापी की जाँच की जाएगी।

Scanned with CamScanner